अगस्त 2015

वर्ष 28 प्रथम अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 सोच से निकालें त्रुटियाँ

विशेष स्तम्भ

11 समसामयिक सामान्य ज्ञान

16 आर्थिक परिदृश्य

21 राष्ट्रीय परिदृश्य

25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

29 खेलकूद परिदृश्य

33 विज्ञान समाचार

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

38 सारभूत तत्व कोष

लेख

42 औद्योगिक लेख– भारत की नई विदेश व्यापार नीति : 2015–20

43 कैरियर लेख–(i) एस.एस.सी. (10+2) कम्बाइंड हायर सेकण्डरी लेवल परीक्षा, 2015 हेतु विशेष

45 (ii) भारतीय जीवन बीमा निगम में एडीओ की भर्ती परीक्षा, 2015 हेतु विशेष

हल प्रश्न-पत्र

47 आगामी चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015

58 आगामी आई. बी. पी. एस. द्वारा आयोजित बैंक प्रोबेशनरी ऑफीसर्स/मैनेजमेण्ट ट्रेनीज परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के सहयोगी बैंक लिपिकीय संवर्ग परीक्षा, 2015

68 तर्कशक्ति

72 सामान्य सचेतता

75 परिमाणात्मक योग्यता

79 English Language

83 मार्केटिंग योग्यता एवं कम्प्यूटर सचेतता

86 मध्य प्रदेश एकीकृत महिला एवं बाल विकास विभाग पर्यवेक्षक (महिला) सीधी भर्ती परीक्षा, 2014

96 आर.आर. बी. तकनीकी कैडर (इलाहाबाद) परीक्षा, 2014

107 आर.आर.सी.(दिल्ली) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

सामान्य जानकारी

113 ग्रामीण आर्थिक एवं सामाजिक समस्याएं सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी– उत्तर प्रदेश राजस्व विभाग लेखपाल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष जानकारी

118 ज्ञान वृद्धि कीजिए

119 रोजगार समाचार

122 वार्षिकी

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

● **E-mail :** publisher@pdgroup.in ● **Website :** www.pdgroup.in

सोच से निकलें त्रुटियाँ

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

''यदि आप में आत्मविश्वास नहीं है तो आप हमेशा न जीतने का बहाना खोज लेंगे.''

– कार्ल लेविस

इस संसार में जो विनम्र, जिज्ञासु, उदार हृदय, संतुष्टमना, पवित्र एवं संतुलित व्यवहार करने वाले तथा सदा मानव-मानव को जोड़ने वाले और एकता बढ़ाने वाले लोग हैं, वे ही वास्तव में धन्य हैं. इंसान का जीवन पाकर इंसान कहलाए जाने योग्य हैं. महात्मा यीशु का तो यहाँ तक कहना है कि ऐसे ही लोग प्रभु के राज्य में प्रवेश पा सकेंगे. ऐसे लोग ही ईशपुत्र कहलाने लायक हैं.

किन्तु जो लोग जिद्दी, घमण्डी, छल-प्रपंच में मशगूल, स्वार्थी, अनुदार, असंतुष्ट, अपवित्र व असम्यक् विचार व व्यवहार करने में निपुण व इंसानों के दिलों को तोड़ने वाले हैं वे विश्वासघाती हैं व सही मायने में इंसानियत से कोसों दूर हैं. ऐसे लोग तो इस पृथ्वी पर भी भार स्वरूप ही हैं.

हमारी आधुनिक पीढ़ी को प्राप्त हो रही महँगी शिक्षा, उत्तम सुविधायुक्त घर व माहौल उसे कैसा इंसान बना रहा है. आज का आदमी एक-दूसरे के लिए सहयोगी, विश्वासजनक व पवित्र मानस का धनी है या मतलबी, संदेहपरक व अपवित्र?

क्यों भला किसी भी अन्य लड़के या लड़की को देखकर हमारा मन पवित्र नहीं रह पाता? आज के वातावरण में बढ़ती स्वार्थपरता व शुद्धता का जिम्मेदार कौन?

हमारा माहौल, अभिभावक, शिक्षक या आधुनिक सुविधापरस्त सोच?

हम समझते हैं कि अभिभावक, शिक्षक या किसी भी अन्य को दोष देने की बजाय ऐसे समय में हमें अपनी ही सोच का निरीक्षण कर लेना चाहिए. निश्चित ही, हमारी सोच ही हमारे व्यवहार व वातावरण को प्रभावित करती है. हमारी सोच में कुछ अशुद्धियाँ हैं, जिन्हें जानकर दूर कर लेना हम सबके लिए जरूरी है.

(1) उपयोग करो और फेंको की मानसिकता

चाहे बालक हो या युवा, प्रौढ़ हो या बुजुर्ग यह मानसिकता हमारे सबके भीतर घर कर ही चुकी है कि हरेक चीज़ ऐसी रहे जिसको अधिकतम उपयोग करके उसे फेंक दें. यह सोच अब वस्तुओं तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि हमारे रिश्तों में भी आने लगी हैं. पाश्चात्य देशों में ऐसी संस्कृति रही है कि बच्चे पर्याप्त युवा होने के बाद माता-पिता के साथ नहीं रहते, अनेक बार माता-पिता स्वयं भी अपने रिश्तों को नहीं निभाते व अनेक के जीवन में सम्बन्ध स्थापित करते हुए अपनी जीवन यात्रा पूरी करते हैं. आज हमारे देश में भी ऐसी संस्कृति फैलती जा रही है जहाँ आधुनिक होने की चाह में दौड़ रही युवा पीढ़ी आकर्षण के प्रभाव से प्रभावित होकर कभी कहीं तो कभी कहीं सम्बन्ध स्थापित करती हैं. जहाँ स्वार्थ सध गया वहाँ शीघ्र ही रिश्ते समाप्त हो जाते हैं. हर कोई अपनी शर्तों व चाहतों में उलझा हुआ औरों से सम्पर्क बनाता है. सारे ही रिश्ते 'उपयोगिता' के आधार पर टिके हैं. माँ-पिता से भी जब स्वार्थ सधना बंद हो जाता है, पढ़े-लिखे बच्चे उनको या तो अकेले घर पर छोड़ने को तत्पर हैं या वृद्धाश्रम में. हर कोई दूसरे का अधिकतम उपयोग कर लेना चाहता है, चाहे वह जान-पहचान का नाता हो, चाहे मित्र-सम्बन्धी का.